॥ श्रीः ॥

योगशतकम्.

महापण्डित श्रीयुतवररुचिकृत.

मुरादाबाद निवासी पण्डित ज्वाला-
प्रसाद मिश्रकृत-
भाषाटीकासमेत ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने
बंबई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९५७, शके १८२२.

भूमिका।
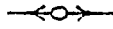
यद्यपि वैद्यकशास्त्रके बड़े २ ग्रंथ इसदेशमें प्रसिद्ध हैं जिनके पठन पाठन ज्ञानमें बहुत काल लगताहै और सर्वसाधारणको सुलभ नहीं होसक्ते तथा गृहस्थमात्रका विशेष उपकार नहीं होता। इसीकारण उन महात्माओंने सर्वसाधारणमात्रके उपकारके निमित्त सारभूत छोटे २ ग्रंथोंकी रचना की है जिससे छोटे बड़े थोडे परिश्रमसे कंठ करके बहुत लाभ उठासकते हैं. उन्हीं ग्रंथोंमेंसे महाराज भोजके नवरत्नोंमेंसे श्री महापण्डित वररुचि का बनाया "योगशतक" भाषाटीका सहित पाठक महाशयोंकी भेंट करतेहैं इस छोटेसे ग्रन्थमें अनुभवसिद्ध प्रयोग लिखेहैं जिनके ज्ञानसे प्रत्येक मनुष्य प्रायः सभी रोगोंकी चिकित्सा जानकर अपनी आवश्यकता पूर्ण करसकता है. यही विचारकर हमने इसका भाषाटीका बनाय सर्वगुणसम्पन्न सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजी "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्राध्यक्ष महाशयको समर्पण करदियाहै पाठक महाशय इसके अवलोकनसे लाभ उठावैंगे ऐसी हमको दृढ़ आशाहै ॥

आपका—

ता० ३।६।९७ पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र,
दीनदारपुरा (मुरादाबाद.)

अथ योगशतककी विषयानुक्रमणिका।

योगशतक—अनुक्रमणिका ।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता.

श्रीः।

योगशतकम्।

भाषाटीकासमेतम्।
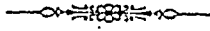
मङ्गलाचरणम्।

शंकर गौरि गणेशपद, प्रेम सहित हिय लाय।
योगशतक भाषातिलक, बहुविधि लिखत बनाय॥१॥

कृत्स्नस्य तंत्रस्य गृहीतधाम्नश्चिकित्सिताद्विप्रसृतस्य दूरम्। विदग्धवैद्यप्रतिपूजितस्य करिष्यते योगशतस्य बन्धः॥१॥

वैद्यकशास्त्रकी चिकित्साके ग्रन्थ बहुत विस्तारसे हैं, उन सबका ज्ञान प्राप्त करना बड़ा कठिन है, इसकारण उन सबका सार लेकर यह "योगशतक" नया ग्रन्थ, चतुर वैद्योंके मान करनेयोग्य मैं (वररुचि) निर्माण करताहूं॥१॥

परीक्ष्य हेत्वामयलक्षणानि चिकित्सितज्ञेन चिकित्सकेन। निरामदेहस्य हि भेषजानि भवंति युक्तान्यमृतोपमानि॥२॥

प्रथम वैद्यको रोग, उसका कारण और लक्षण जानना उचितहै. पीछे उसका उपचार करना चाहिये. औषधियोंके उपचारको ही चिकित्सा कहतेहैं. चिकित्साके आठ अंग होतेहैं सो आगेके श्लोकमें कहेंगे. वैद्य, रोग उसका लक्षण परीक्षाकर लंघन पाचन वमनसे विरेचनादि क्रियासे देह आरोग्य करै पीछे औषधी दे तव औषधी रोग दूर करनेको अमृतके समान गुणकरतीहैं जवतक वमन विरेचनादिसे आमाशय शुद्ध नहीं होता तवतक औषधी गुण नहींकरतीं निरामयदेह पर गुणकरतीहैं॥२॥

शरीरनेत्रव्रणरोपणानि विषाणि भूतानि च बालतन्त्रम् । रसायनं पंचविधं च कर्म अष्टांगमायुः कथयन्ति वैद्याः ॥ ३ ॥

चिकित्साके आठ अंग ये हैं-शरीरचिकित्सा १, नेत्रचिकित्सा (शलाकाप्रयोगादि) २, व्रणरोपण अर्थात् शल्यचिकित्सा ३, विषचिकित्सा अर्थात् कुत्ता, विषैलेजीव सर्पादिकेकाटनेपर औषधी४, भूत अर्थात् ग्रहचिकित्सा५, बालचिकित्सा ६, रसायनचिकित्सा ७, पंचविधिकर्म ८, पंचविधिकर्मके वदले प्राचीन आचार्योंने आठवाँ अंग वाजीकरण कहाहै परन्तु 'वररुचि' पण्डितने रसायनमें वाजीकरणका समावेश कियाहै, अब इसके अन्तर्गतही सव अंग आजाते हैं इसकारण इनके साथ पंचविधिकर्मकी

संगति की है शरीरचिकित्सा-युवावस्थासे पूर्वहीसे प्रारंभ कर ज्वर अतिसारादिके उपचारको शरीरचिकित्सा कहतेहैं (१) नेत्रचिकित्सा-अर्थात् नेत्रसम्बन्धी रोग तथा कान नाक मुख सम्बन्धी रोगोंकी चिकित्साभी इसीके अन्तर्गत है (२) व्रणरोपणचिकित्सा-शरीरमें उत्पन्न हुए व्रण, फोड़ा, फुन्सी आदिका उपचार व्रणरोपण चिकित्सा है (३) विषचिकित्सा-सर्प, बिच्छू, आदिका जंगमविष, संखल, बचनाग, आदिका स्थावर विष, कृत्रिम-विष, योगजविष, इनके प्रतिकारका उपाय विषचिकित्साहै (४) भूतचिकित्सा-ग्रह, भूत, पिशाच, आदिकी पीड़ाका उपचार भूतचिकित्सा है (५) बालचिकित्सा-दूध पीनेवाले बालकोंके रोगनिवारण विधानको बालचिकित्सा कहतेहैं (६) रसायनचिकित्सा-शरीरमें वृद्धापन, व्याधि, वीर्यकी क्षीणता, इसके दूर करनेका उपचार रसायन चिकित्साहै; क्षीणवीर्यको पुष्ट करना, रतिसामर्थ्य करना, ऐसे उपचारको वाजीकारणचिकित्सा कहतेहैं; वररुचिने इसको रसायनके अन्तर्गत मानाहै (७) पंचविधिकर्म-स्नेहविधि, स्वेदविधि, वमनविधि, विरेचनविधि, वस्तिकर्म; यही पांच कर्म शरीरके शोधक हैं.प्रथम पांचकर्मसे देह शुद्धकर रोगका उपचार करे तो सफलता प्राप्त हो, वैद्यको यश, रोगीका रोग दूर होकर आरोग्यता प्राप्त होतीहै (८) ॥ ३ ॥

वातपित्तकफज्वरपर क्रमसे काढे ।

छिन्नोद्भवांबुधरधन्वयवासविश्वैर्दुःस्पर्शपर्पटकमेघकिराततिक्तैः ॥ मुस्ताटरूषकमहौषधधन्वयासैः क्वाथं पिबेदनिलपित्त कफज्वरेषु ॥ ४ ॥

गिलोय, नागरमोथा, धमासा, सोंठ, इनका काढ़ा करदेनेसे वातज्वर जाताहै । धमासा, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, चिरायता, कुटकी, इनका काढ़ा पित्तज्वरमें देना । तथा नागरमोथा, अडूसा, इनका पान करनेसे, तथा सोंठ, धमासा, इनका काढ़ा कर पीनेसे कफज्वर शान्त होताहै ४॥

क्षुद्रामृतानागरपुष्कराह्वयैः कृतः कषायः कफमारुतोत्तरे । सश्वासकासारुचिपार्श्वशूले ज्वरे त्रिदोषप्रभवेऽपि शस्यते ॥ ५ ॥

भटकटैया, गिलोय, सोंठ, पुष्करमूल, इनका काढ़ा पीनेसे कफ, वात, ज्वर, श्वास, कास, अरुचि, पसलियोंका शूल तथा त्रिदोषज्वर शांत होजाताहै ॥ ५ ॥

आरग्वधग्रंथिकतिक्तमुस्ताहरीतकीभिः क्वथितः कषायः । सामे सशूले कफवातयुक्ते ज्वरे हितो दीपनपाचनश्च ॥ ६ ॥

अमलतासका गूदा, पीपलामूल, कुटकी, नागरमोथा,

हरड़, इनका काढ़ा सेवन करनेसे कफवात ज्वर,आमशूल दूर होकर अग्नि दीप्त तथा पाचनकी सामर्थ्य होतीहै॥६॥

द्राक्षामृतापर्पटकाब्दतिक्ताक्काथः सशम्याकफलोविदध्यात्। प्रलापमूर्च्छाभ्रमदाहशोषतृष्णान्विते पित्तभवज्वरे च ॥७॥

कालीदाख, गिलोय, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, कुटकी, अमलतासका गूदा, इनका काढ़ा प्रलाप, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, शोष, तथा तृष्णायुक्त पित्तज्वरमें हितकरनेवाला है॥

निदिग्धिकानागरिकामृतानां क्काथं पिबेन्मिश्रितपिप्पलीकम्। जीर्णज्वरारोचककासशूलश्वासाग्निमांद्यार्दितपीनसेषु ॥ ८ ॥

अटकटैया, सोंठ, गिलोय, इनका काढ़ा पीपलका चूर्ण डालकर पीवे तो जीर्णज्वर अरुचि कास शूल श्वास अग्निकी मंदता अर्दितवायु पीनस इन रोगोंको दूर करता है॥ ८॥

पित्तज्वरका उपचार।

दुरालभापर्पटकप्रियंगुभूनिंबवासाकटुरोहिणीनाम्। क्काथं पिबेच्छर्करयावगाढं तृष्णास्रपित्तज्वरदाहयुक्तः ॥ ९ ॥

धमासा, पित्तपापड़ा, प्रियंगु, चिरायता, अडूसा,

कुटकी, इनका काढ़ा मिश्री डालकर पीवे तो तृष्णादाह-युक्त पित्तज्वरका नाश होताहै ॥ ९॥

सन्निपात मूर्च्छाज्वरका उपचार ।

दार्व्यंबुदौतिक्तफलत्रिकं च क्षुद्रापटोली रजनी सनिम्बा । क्वाथं विदध्याज्ज्वर सन्निपाते निश्चेतने पुंसि विबोधनार्थम् ॥ १० ॥

दारुहलदी, नागरमोथा, कुटकी, त्रिफला, (हरड़, बहेड़ा आमला) अटकटैया पटोलपात, हलदी, नीमकी छाल, इनका काढ़ा सन्निपात ज्वरमें देनेसे अचेतन मनुष्य सचेत होजाताहै ॥ १० ॥

अतीसारका उपचार ।

सवत्सकः सातिविषः सबिल्वः सोदीच्यमुस्तश्च कृतः कषायः । सामे सशूले च सशोणिते च चिरप्रवृत्तेऽपि हितोतिसारे ॥ ११ ॥

कुटजकी जड़की छाल, अतीस, बेलका गूदा, बाला, नागरमोथा, इनका काढ़ा आमसम्बन्धी शूल रक्तातिसार पुराना अतिसार दूर करताहै ॥ ११ ॥

संग्रहणीका उपचार ।

शुंठीं समुस्तातिविषां गुडूचीं पिबेज्जलेन क्वथितां समांशाम् । मंदानलत्वे सततामवाते सामानुबंधे ग्रहणीगदे च ॥ १२ ॥

सोंठ, नागरमोथा, अतीस, गिलोय, इनका काढ़ा समान भागकर पान करनेसे मंदाग्नि आमवात आमसहित संग्रहणीको दूर करताहै ॥ १२ ॥

त्वग्दोष, शोफोदर व पांडुरोगका उपचार।

पुनर्नवादार्व्यभयागुडूचीः पिबेत्समूत्रा महिषाक्षयुक्ताः। त्वग्दोषशोफोदरपांडु-रोगस्थौल्यप्रसेकोर्ध्वकफामयेषु ॥ १३ ॥

पुनर्नवा, दारुहलदी, हरड़, गिलोय, इनका काढ़ा गोमूत्र, और गूगल डालकर पीवे तो त्वचाके दोष सूजन उदर, पाण्डुरोग, स्थूलता प्रत्येक, ऊर्ध्वकफादि रोग दूर होतेहैं ॥ १२ ॥

कृमिका उपचार।

मुस्ताखुपर्णीफलदारुशिग्रुकाथः सकृष्णा कृमिशत्रुकल्कः। मार्गद्वयेनापि चिरप्र-वृत्तान्कृमीन्निहन्यात्कृमिजांश्च रोगान् ॥ १४ ॥

नागरमोथा, मूसापर्णी, त्रिफला, देवदारु, सहिंजना, इनका काढ़ा पीपल, और वायविडंगका चूर्ण डालकर पीवे मार्गसे निकलतेहुए कृमि तथा कृमिसे उत्पन्न रोगोंको नष्ट करताहै ॥ १४ ॥

प्रमेहका उपचार।

फलत्रिकं दारुनिशा विशाला मुस्ता च

निःष्क्काथनिशा सकल्कम् । पिबेत्कषायं मधुसंयुतं च सर्वप्रमेहेषु समुत्थितेषु ॥ १५॥

त्रिफला, दारुहल्दी, इन्द्रायण, नागरमोथा, इनका काढ़ा हलदीका चूर्ण और शहत डालकर पीवे तो सर्वप्रकारके प्रमेह दूर हों ॥ १५॥

मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) का उपचार ।

एलोपकुल्यामधुकाश्मभेदकौंतीश्वदंष्ट्रा वृषकोरुबूकैः । शृतं पिबेदश्मजतुप्रधानं सशर्करं साश्मरि मूत्रकृच्छ्रे ॥ १६ ॥

इलायची, पीपली, जेठीमधु, पाषाणभेद, रेणुका, गोखरू, अडूसा और एरण्डकी जड़ इनका काढ़ा शिलाजीत व मिश्रीडालकर पीवे तो अश्मरी और मूत्रकृच्छ्र दूर होताहै ॥ १६ ॥

मूत्रकृच्छ्र, मूत्रघातका उपचार ।

हरीतकीगोक्षुरराजवृक्षपाषाणभिद्धन्वयवासकानाम् । क्वाथं पिबेन्माक्षिकसंप्रयुक्तं कृच्छ्रे सदाहे सरुजे विबंधे ॥ १७ ॥

हरड़, गोखरू, अमलतास, पाषाणभेद, धमासा, इनका काढ़ा शहत डालकर पीवे तो दाहयुक्त मूत्रकृच्छ्र मूत्रघात दूरहो ॥ १७॥

वातरक्तका उपचार ।

वासा गुडूची चतुरंगुलानामेरंडतैलेन पिबे-
त्कषायम् । क्रमेण सर्वांगजमप्यशेषं जये-
दसृग्वातभवं विकारम् ॥ १८ ॥

अडूसा, गिलोय, अमलतास, इनका काढ़ा एरंडका
तेल डालकर पीवे तो सर्वांगमें प्राप्तहुए वातरक्तके विका-
रको दूर करताहै ॥ १८ ॥

प्रदर व श्वासका उपचार ।

रसांजनं तंदुलकस्य मूलं क्षौद्रान्वितं
तंडुलतोयपीतम् । असृग्धरं सर्वभवं नि-
हंति श्वासं च भार्ङ्गी सह नागरेण ॥ १९ ॥

रसोत, चौंलाईकी जड़, चावलोंका जल, यह शहत
डालकर पीवे तो सबप्रकारके प्रदर दूर होतेहैं । भारंगी-
मूल और सोंठका चूर्ण खानेसे सब श्वास दूर
होताहै ॥ १९ ॥

एरंडबिल्वबृहतीद्वयमातुलिङ्गपाषाण-
भिन्त्रिकटुमूलकृतः कषायः । सक्षारहिंगु-
लवणोरुबुतैलमिश्रः श्रोण्यूरुमेढ्रहृदय-
स्तनरुक्षु पेयः ॥ २० ॥

एरण्ड, बेल, कटेरी–दोनों, मातुलिंग, इनकी जड़ और पाषाणभेद, त्रिकुटा (सोंठ-मिर्च-पीपल) इनका काढ़ा जवाखार हींग, सैंधा और एरंडका तेल डालकर सेवन करे तो कमरका दर्द और शिश्न हृदय और स्तनका शूल दूर हो ॥ २० ॥

हृदय कोख मुख पसली पीठ जठर शूल पर उपचार ।

चूर्णं समं रुचकहिंगुमहौषधानामुष्णाम्बुना कफसमीरणसंभवासु । हृत्पार्श्वपृष्ठजठरार्तिविषूचिकासु पेयं तथा यवरसेन च विड्विबंधे ॥ २१ ॥

सौवर्चललोन, हींग, सोंठ, इनको समभागले चूरण कर गरम जलके साथ लेवे तो कफवातसे उत्पन्न हुए हृदय, पँसवाड़े, पीठ, पेटका शूल, विषूचिका दूर करे और मलबंधमें जवका काढा पीवे ॥ २१ ॥

गुल्म उदर आनाह विषूचिकाका उपचार ।

हिंगूग्रगंधाविडशुंठ्यजाजीहरीतकीपुष्करमूलकुष्ठम् । भागोत्तरं चूर्णितमेतदिष्टं गुल्मोदरानाहविषूचिकासु ॥ २२ ॥

हींग, अजवायन, विटलवण, सोंठ, जीरा, हरड़, पुष्करमूल, कूठ, इनका भाग क्रमसे एक दूसरेसे बढ़ाकर

चूर्णकर खानेसे गुल्म, उदर, आनाह, (मलबद्ध मूत्रबद्ध) विषूचिका, दूर होतीहैं ॥ २२ ॥

गुल्म–उदर–सूजन–पांडुरोगका उपचार।

पूतीकपत्रगजचिर्भटचव्यवह्निव्योषं च सं स्तरचितं लवणोपधानम्। दग्ध्वा विचूर्ण्य दधिमस्तुयुतं प्रयोज्यं गुल्मोदरश्वयथुपांडुगुदोद्भवेषु ॥ २३ ॥

करंजके पत्ते, गोरखककड़ी, चव्य, चीता, सोंठ, मिरच, पीपल और लवण ले और इनको भूनकर चूर्णकर दही मट्ठेके साथ देनेसे गुल्मोदर, सूजन, पांडुरोग, गुदरोगादि दूर होते हैं ॥ २३ ॥

नादेयीकुटजर्किशिग्रुबृहतीस्नुकबिल्व भल्लातकं व्याघ्रीकिंशुकपारिभद्रक- जटापामार्गनीपाग्निकान्। वासामु- ष्ककपाटलान्सलवणान्दग्ध्वा रसं पा- चितं हिंग्वादिप्रतिवापमेतदुदितं गुल्मो- दराष्ठीलिषु ॥ २४ ॥

अरणि, और इन्द्रजौ, मंदार, सहिंजना, कटेरी, थूहर, बेली, भिलावा, कटेरी, छोटीपलाश, कटुनिम्ब, जटामांसी, अपामार्ग, कदम्ब, चीता, अडूसा, मोरवा, पाढलकी मूल, यह

सब एकत्रित करके और यह सब औषधी बराबर ले पीसले इसके अनुसार सैंधा ले इन सबको अग्निमें रखकर भस्म करै वह भस्म और पंचलवण एकत्र कर हांडीमें डाल पकावै फिर पानीमें डाल घोलै जब औटते औटते तृतीयांश रहजाय तौ उसमें हींग (भुनीहुई) डालकर सेवन करे तौ गुल्मोदर अष्ठीला निवारण हो ॥ २४ ॥

हिचकी श्वास उर्ध्ववातका उपचार ।

शृंगीकटुत्रिकफलत्रयकंटकारीभार्ङ्गीसपुष्करजटा लवणानि पंच ॥ चूर्णं पिबेद्शिशिरेण जलेन हिक्काश्वासोर्ध्ववातकसनारुचिपीनसेषु ॥ २५ ॥

काकड़ासींगी, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, कटेरी, भारंगी, पुष्करमूलकीजड़, पांचों नोंन इनका चूर्ण कुछ गरम जलके साथ पीनेसे हिचकी, श्वास, ऊर्ध्ववात, खाँसी, अरुचिको दूर करताहै ॥ २५ ॥

स्वरभेद कफ व अरुचिका उपचार ।

चव्याम्लवेतसकटुत्रयतित्तिडीकतालीसजीरकतुगादहनैः समांशैः॥चूर्णं गुडप्रमुदितं त्रिसुगंधयुक्तं वैस्वर्यपीनसकफारुचिषु प्रशस्तम् ॥ २६ ॥

चव्य, अम्लवेत, सोंठ, मिर्च, पीपल, इमली, तालीस-पत्र, वंशलोचन, चीता इनका चूर्णकर इलायची, दाल-चीनी, तेजपातके साथ गुड़ मिलाय सेवन करै तो स्वरभेद पीनस कफ अरुचि दूरहोती है ॥ २६ ॥

तालीसचव्यमरिचं सदशं द्विरंशांमूलानुगा-मगधजां त्रिगुणां च शुंठीम् । कृत्वा गुड-प्रमुदितं त्रिसुगंधयुक्तं कासाग्निमांद्य-गुदजज्वररुक्षु दद्यात् ॥ २७ ॥

तालीसपत्र, चव्य, मिर्च, हींग, एकभाग पीपल, पीपला-मूल हींग २ दोदो भाग सोंठ, ३ भाग दालचीनी, तमाल पत्र तेजपात इलायची एकभाग इसका काढ़ा देनेसे खांसी मन्दाग्नि गुदरोग ज्वर इनको दूर करताहै ॥ २७ ॥

मूलव्याधि, मंदाग्नि, आदिपर समशर्करा चूर्ण ।

शुंठीकणामरिचनागदलं त्वगेलाचूर्णं कृतं क्रमविवर्धितमूर्ध्वमंत्यात् । खादेदिदं सम-सितं गुदजाग्निमांद्यकासारुचिश्वसन-कंठहृदामयेषु ॥ २८ ॥

सोंठ, मिर्च, पीपल, नागदल (प्रसिद्ध), दालचीनी, इलायची, इनका चूर्ण क्रमसे भाग वृद्धिकर करे और सबके समान मिश्री डालकर पिये तो मूलव्याधि, मंदाग्नि, खाँसी, अरुचि, श्वास, हृदयकंठादिका रोग दूरहो ॥ २८ ॥

मंदाग्निका उपचार ।

सिंधूत्थहिंगुत्रिफलायवानीव्योषैर्गुडांशैर्गु-
टिकां प्रकुर्यात् । तैर्भक्षितैस्तृप्तिमविद्य-
मानो भुंजीतमंदाग्निरपि प्रभूतम् ॥ २९ ॥

सैंधा निमक, भुनीहींग, त्रिफला, अजवायन, सोंठ, मिर्च, पीपल, इनका चूर्णकर गुड़ से गुटिका बनाय खाय तौ मंदाग्नि दूर हो ॥ २९ ॥

आम अजीर्ण मूलव्याधि मलका अवरोध इनका उपचार ।

गुडेन शुंठीमथवोपकुल्यां पथ्यां तृतीयाम-
थ दाडिमं वा । आमेष्वजीर्णेषु गुदामयेषु वं-
र्चोविबंधेषु च नित्यमिष्टम् ॥ ३० ॥

गुड़की बराबर सोंठ, पीपली, हरड़, वा दाडिमी, इनके सवन करनेसे आम, अजीर्ण, मूलव्याधि, मलका अवष्टंभ यह दूर होताहै ॥ ३० ॥

पांडुरोग पर उपचार ।

अयस्तिलत्र्यूषणकोलभागैः सर्वैः समं
माक्षिकधातुचूर्णम् । तैर्मोदकः क्षौद्रयुतो हि
भुक्तः पांड्वामये दूरगतेऽपि शस्तः ॥ ३१ ॥

लोहभस्म, तिल, सोंठ, मिर्च, पीपल, बेसर, इन सबको समानभाग लेकर सबकी बराबर माक्षिक भस्म डालकर

गोली बनाय शहत बराबर खाय तो असाध्य पाण्डुरोगभी दूर होताहै ॥ ३१ ॥

हरीतकीनागरमुस्तचूर्णं गुडेनमिश्रैर्गुटिका विधेया । निवारयत्यास्यविधारितेयं श्वासं प्रवृद्धं प्रबलं च कासम् ॥ ३२ ॥

हरड़, सोंठ, नागरमोथा, इनका चूर्ण करके गुड़ डालकर इसकी गुटिका बनावे यह बढ़ेहुए श्वास और खांसीको दूर करताहै ॥ ३२ ॥

मनःशिलामागधिकोषणानां चूर्ण कपित्थाम्लरसेन युक्तम् । लाजैः समांशैर्मधुना च लीढं छर्दिं प्रवृद्धामसकृन्निहन्ति ॥ ३३ ॥

मनशिल, पीपल, मिर्च, इनको समान लेकर इनकी बराबर लाजा सोंठ ले कैथ और विजौरेके रसके साथ मिलाकर चाटै तौ छर्दि और बढाहुआ आमरोग एकसाथ नष्ट होताहै ॥ ३३ ॥

तृषा पर उपचार ।

वटप्ररोहंमधुकुष्ठमुत्पलं सलाजचूर्णं गुटिकां प्रकुर्यात् । सुसंहितां सा वदने विधारिता तृष्णां प्रवृद्धामपि हंति सत्त्वरम् ॥ ३४ ॥

वड़के अंकुर, जेठीमधु, कूठ, नीलाकमल, लाजा

इनका चूर्णकर गुटिका बनावे, इसको मुखमें धारण करे तौ बढ़ीहुई तृष्णा शान्त होजाती है ॥ ३४ ॥

दूर्वारसोदाडिमपुष्पजो वा घ्राणप्रवृत्ते सृजि नस्यमुक्तम् । स्तन्येन वाऽलक्तरसेन वापि विण्माक्षिकाणां विनहंति हिक्काम् ॥ ३५ ॥

दूर्वाका रस अथवा दाडिमीके पत्तोंका रस निचोड़कर नाकमें नास लेनेसे नाकसे रक्तनिकलना दूर होताहै अथवा स्त्रीके दूधकी वा लाक्षारसकी नास देनेसे हिचकी दूर होतीहैं ॥ ३५ ॥

धात्रीरसः सर्जरसः सपाक्यः सौवीरविष्टश्च तदासुतश्च । भवंति सिध्मानि यथाऽनुभूय स्तथैतदुद्वर्तनकं करोति ॥ ३६ ॥

आंवलेका रस, राल, जवाखार कांजीके साथ लेप करनेसे सिध्म (कुष्ठ) रोग दूर होताहै ॥ ३६ ॥

दूर्वाभयासैंधवचक्रमर्दकुठेरकाः कांजिकतक्रपिष्टाः । त्रिभिः प्रलेपैरपि बद्धमूलां दद्रुंच कंडूं च विनाशयंति ॥ ३७ ॥

दूर्वा, हरड़, सैंधा, चकवड़, तुलसी, और कांजी यह मट्ठेके साथ पीसकर तीनवार लेप करनेसे बद्धमूल दद्रु (दाद) खुजली आदि दूर होतेहैं ॥ ३७ ॥

मंडलकुष्ठ दद्रु, दुष्टव्रणका उपचार।

गंडीरकाचित्रकमार्कवार्ककुष्ठद्रुमत्वग्लवणानि पंच। तैलं पचेन्मंडलदद्रुकुष्ठे दुष्टव्रणानां व्यथितापहारि॥ ३८॥

सेहुंडवृक्षका दूध, चीतेकी जड़की छाल, नीलाभांगरा, आक, कूठ, दालचीनी, पांचों लोन लेकर इनसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना गोमूत्र डालकर औटावे जब रसजलजाय तेलमात्र रहजाय तब यह लगानेसे कुष्ठ दाद दुष्टव्रण आदि सब दूर होतेहैं॥ ३८॥

सिंदूरगुग्गुलरसांजनसिक्थतुत्थैः कल्कीकृतैः कटुकतैलमिदं सुपक्वम्। कच्छूं स्रवस्ति टिकजामथ वापि शुष्कामभ्यंजनेन सकृदुद्धरति प्रसह्य॥ ३९॥

सिंदूर, गूगल, रसोत, मोम, तुत्थ, समानभाग ले इनका कल्ककर सरसोंके तेलमें पकावै फिर इसका लेप करनेसे खाज स्राव टिटका शुष्कता—इत्यादि बहुत प्रकारके रोग दूर होतेहैं॥ ३९॥

विषमज्वरपर षट्चक्रतेल।

सुवर्चिकानागरकुष्ठमूर्वालाक्षानिशालोहि-

तयष्टिकाभिः । तैलं ज्वरे षड्गुणतक्रसिद्ध-
मभ्यंजनाच्छीतविदाहनुत्स्यात् ॥ ४० ॥

सज्जीखार, सोंठ, कूठ, मूर्वा, लाख, हलदी, लालचंदन अथवा मजीठ, जेठीमधु, यह एक एक तोलाभर ले इसमें १६ तोले तेल और उससे छः गुना मट्ठाले इसे औटावे जब तेलमात्र रहजाय तब उतारले शरीरमें मलनेसे शीतदाह दूर होताहै ॥ ४० ॥

सर्पिर्गुडूचीवृषकंटकारिकाथेन कल्केन च सिद्धमेतत् । पेयं पुराणज्वरकासगुल्मश्वा साग्निमांद्यग्रहणीगदेषु ॥ ४१ ॥

घृत, गिलोय, अडूसा, कटेरी इनका काथकर सिद्धकर पिये तो पुराना ज़्वर कास गुल्म श्वास मंदाग्नि ग्रहणी रोग दूर होतेहैं ॥ ४१ ॥

विसर्पकुष्ठ गुल्मका उपचार ।

वृषखदिरपटोलनिंबपत्रत्वगमृतमामलकी-
कषायकल्कैः । घृतमभिनवमेतदाशु पक्वं जयति तदास्रविसर्पकुष्ठगुल्मान् ॥ ४२ ॥

अडूसा, खैर, परवल, कटुनीमके पत्ते और छाल, गिलोय, आमला इनका कल्ककर नवीनघृतमें सिद्धकरे तो रक्त विसर्प और कुष्ठका नाश होताहै ॥ ४२ ॥

कुष्ठका उपचार।

अमृतापटोलपिचुमंदधावनीत्रिफलाकरंज-
वृषकल्कवारिभिः । घृतमुत्तमं विधिविप-
क्वमाद्दतः प्रपिबेदिदं जयति कुष्टमातुरः ४३॥

गिलोय, परवल, कटुनिम्ब, पिठवन, त्रिफला, करंजकी छाल, अडूसेका अर्क, इनका काढाकर घृतमें सिद्धकरे पान करनेसे कुष्टरोग दूर होताहै ॥ ४३ ॥

क्षीणतापर कूष्माण्डावलेह।

खंडान्कूष्मांडकानामथ पचनविधिः स्विन्न
शुष्काज्यभृष्टान्न्यासेत्खंडे विपक्वे समरिच-
मगधाशुंठ्यजाजीत्रिगंधैः । लेहोऽयं बाल-
वृद्धानिलरुधिरकृशस्त्रीप्रसक्तक्षतानां, तृष्णा-
कासास्रपित्तश्वसनगुदरुजाछर्दितानां च
शस्तः ॥ ४४ ॥

पेठेको छीलकर उसके छोटे छोटे टुकडे करले फिर उसे जोश देकर अच्छीप्रकार पाक करे खांडकी चासनीमें डालदे. उसमें काली मिर्च, सोंठ, जीरा, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, इनका चूर्ण डालकर अवलेहकर बालक वृद्ध कोई सेवन करे तो वायुरोग रक्तविकार अति स्त्री

प्रसंगकी क्षीणता व्रणरोग तृषा खांसी रक्तपित्त श्वास शूलव्याधि आदि रोग दूर होतेहैं ॥ ४४ ॥

आनाहका उपचार ।

विपाच्य मूत्राम्लमधूनि दंतीपिंडीतकृष्णा-विडधूमकुष्ठैः ॥ वर्तीं करांगुष्ठनिभां घृताक्तां गुदे रुजानाहहरीं निदध्यात् ॥ ४५ ॥

दंतीकी मूल, मैनफलका मगज, पीपल, बिटलोन, घरका धुआं और कूठ यह गोमूत्र कांजी और निम्बूके रससे पकावे और अंगुष्ठप्रमाण इसकी वत्ती गुदामें घृतल-गाकर रक्खे तौ मल मूत्र बहुतअफारा दूर होताहै ॥४५॥

सशर्करं कुंकुममाज्यभृष्टं नस्यं विधेयं पवनासृगुत्थे भ्रूशंखकर्णाक्षिशिरोर्द्धशूले दिनाभिवृद्धिप्रभवे च रोगे ॥ ४६ ॥

मिश्री सहित घृतमें भूनि केसर ले इसका नास देनेसे वायुरक्तका दर्द तथा भौं शंख कान आँखकी पीड़ा आधा शीशी तथा सूर्यावर्त रोग दूर होताहै ॥ ४६ ॥

पथ्याक्षधात्रीफलमध्यबीजैस्त्रिद्व्येकभागैर्विद धीत वर्तिम् ॥ तया जयेदस्रमतिप्रवृद्धम-क्ष्णोर्हरेत्कष्टमपि प्रकोपम् ॥ ४७ ॥

हड़की बकली तीनभाग बहेड़ेकी बकली दोभाग

आमलेकी बकली एक भाग इनको पीसकर बत्ती बनावे इसको नेत्रोंमें आंजै तो कठिन पीड़ा भी नष्ट हो ॥ ४७ ॥

हरीतकीसैंधवताक्ष्यंशैलैः सगैरिकैः स्वच्छ जलप्रपिष्टैः ॥ बहिः प्रलेपं नयनस्य कुर्या-त्सद्योऽक्षिरोगोपशमार्थमेनम् ॥ ४८ ॥

हरड़, सैंधा, रसोत, सुवर्ण गेरू, इनको निर्मल जलसे पीस नेत्रोंपर फोया रक्खै तो खुजली और दाह दूर हो ४८

ससैंधवं रोध्रमथाज्यभृष्टं सौवीरपिष्टं सित-वस्त्रबद्धम् ॥ आश्चोतनं तन्नयनस्य कुर्या-त्कंडूं च दाहं च रुजं च हन्यात् ॥ ४९ ॥

अथवा रसौत ।

सैंधा और लोध एकत्र कर घीमें भून कांजीसे पीस श्वेत वस्त्रमें बांध उसकी एक बूंद नेत्रमें डालैतो खुजली दाहादिरोग दूरहों ॥ ४९ ॥

हंत्यर्जुनं शर्करयाब्धिफेनो रात्र्यंधतां गोश-कृताच्च कृष्णा ॥ रसांजनं व्योषयुतं च पिल्ल ताप्यं समुत्थं मधुना च शुक्रम् ॥ ५० ॥

कोह, निर्मल मिश्री, समुद्रफेन,तथा गोबर और पीपल रतौंधा दूर करती है तथा रसोत, सोंठ, मिर्च, पीपल लगा नेसे पिल्लरोग दूर होताहै. फूलेको सुवर्णमाक्षिक, नीला थोथा व शहत शुक्रको दूर करताहै ॥ ५० ॥

अर्मकाचतिमिर आदिका उपचार ।

पुष्पाक्षताक्ष्यंजसितोदधिफेनशंखसिंधूत्थ-गैरिकशिलामरिचैः समांशैः ॥ पिष्टैस्तुमाक्षिकरसेन रसक्रियेयं हंत्यर्मकाचतिमिरार्जुनवर्त्मरोगान् ॥ ५१ ॥

जस्तका फूल, सुरमा, रसोत, मिश्री, समुद्रफेन, शंख, सैंधा, गेरू, मनशिल, कालीमिर्च यह समानभाग ले इनको शहतमें पीस नेत्रोंमें एकबूंद डालै तो आर्म मोतियाबिन्द तिमिर अहिरादिरोग दूर होतेहैं ॥ ५१ ॥

मुस्तोशीररजोयवासमरिचाः सिंधूद्भवं कट्फलं दार्वीतुत्थकशंखफेननलदं कालानुसार्यंजनम् । तुल्यं चूर्णितमायसे विनिहतं क्षौद्रान्वितं शस्यते कंडूर्मामयरक्तराजितिमिरे पिल्लोपदेहेषु च ॥ ५२ ॥

नागरमोथा, खस, लोहचूर, धमासा, काली मिर्च, सेंधा, कायफल, दारुहलदी, तूतिया, शंख, समुद्रफेन, जटामांसी, और सुरमा, इनको समान भागले लोहपात्रमें शहत डालकर खरल करै पीछे इसका अंजन करै तो खुजाहटवडस लाली तिमिर पिल्ल (नेत्ररोग) आंखका गीला रहना दूर होतेहैं ॥ ५२ ॥

नेत्रोंका खुजाना पानी निकलना फूलाआदि निवारण।

मंजिष्ठामधुकोत्पलोदधिमलत्वक्सेव्यगो-
रोचना मांसीचन्दनशंखपत्रगिरिमृत्ता-
लीसपुष्पांजलैः। सर्वैरेव समांशमंजनमिदं
शस्तं सदा चक्षुषः कंडूक्लेदमलाश्रशोणि-
तरुजापिल्लार्मशुक्रापहम् ॥ ५३ ॥

मजीठ, ज्येठीमधु, कूठ, समुद्रफेन, दालचीनी, सुगंधवाला, गोरोचन, जटामांसी, लालचंदन, शंख, तमालपत्र, गेरू, तालीसपत्र, जस्तका फूल, यह समान भागले बारीक पीस गोलीकर आंजन करै तौ नेत्रोंकी खुजलाहट पानीका निकलना मलका निकलना रुधिर विकार पिल्ल आर्मफूला इतने रोग नष्ट होतेहैं ॥ ५३ ॥

कंठरोगका उपचार।

क्वाथः समुस्तातिविषेंद्रदारुकलिंगपाठा
कटुरोहिणीनाम्, गोमूत्रसिद्धं मधुना च
युक्तः पेयो गलव्याधिषु सर्वजेषु ॥ ५४ ॥

नागरमोथा, अतीस, देवदारु, इन्द्रजौ, पाठ, कुटकी, इनका काढ़ा गोमूत्रमें सिद्धकर शहत डालकर पिये तौ गलेकी सब व्याधि दूर हों॥ ५४ ॥

कंठरोगका उपचार ।

यवाग्रजं तेजवतीं सपाठां रसांजनं दारुनिशां सकृष्णाम् ॥ क्षौद्रेण कुर्याद्गुटिकां मुखेन तां धारयेत्सर्वगलामयेषु ॥ ५५ ॥

जवाखार, मालकांगनी, पाठा, रसोत, दारुहलदी, पीपली, शहतसे पीस गुटिका बनाय मुखमें धरे तो सब प्रकारके गलेके रोग दूर हों ॥ ५५ ॥

मुखपाकका उपचार ।

दार्वीगुडूचीसुमनःप्रवालद्राक्षायवासं त्रिफलाकषायः॥ क्षौद्रेण युक्तं कवलग्रहोऽयं मुखस्य पाकं शमयेत्युदीर्णम् ॥ ५६ ॥

दारुहलदी, गिलोय, जाईके कोमलपत्ते, कालीमुनक्का, धमासा, त्रिफला, इनका काढ़ाकर, शहतके साथ ले तो मुख पाक दूर हो ॥ ५६ ॥

दंतरोगका उपचार ।

कुष्टं दार्वी लोध्रपाठा समंगा मुस्ता तिक्ता तेजनी पीतिका च ॥ चूर्णं शस्तं घर्षणं तद्द्विजानां रक्तस्रावं हंति कंडूं रुजं च ॥५७॥

कूठ, दारुहलदी, लोध, पाठा, मजीठ, नागरमोथा, कुटकी, मालकांगनी, इनका चूर्णकर दांतोंसे मलैतो दांतोंसे रुधिरका निकलना खुजली पीड़ा दूर होतीहै ॥ ५७ ॥

कर्णरोगका उपचार।

सौवीरसुक्तार्द्रकमातुलुंगमांसै रसैर्गुग्गुलुसैंधवैश्च ॥ पक्त्वा तथैकं कटुकं निषिंचेत्तत्कर्णयोः कर्णरुजोपशांतैः ॥ ५८ ॥

सौवीर, (जौको पीस उबालै उसमें पानी डालकर पात्रका मुख बंदकर एकदिन रखदे) मधूसूक्त (गिलोय शहत कांजी दहीकी मलाई) ये चारपदार्थ एकत्र कर धान्यराशिमें पांचदिन रक्खे) अदरकका रस मातुलुंगका रस (बिजौरानींबू) मांसरस, गूगल, सैंधा यह सरसोंके तेलमें डालकर पकावे यह कानमें डालनेसे तत्काल कर्णरोग दूरहोताहै ॥

हंसली नासाआदि रोगपर।

वासानिंबपटोलपर्पटफलश्रीमुस्तदार्व्यंबुभिस्तिक्तोशीरदुरालभात्रिकटुकात्रायंतिकाचन्दनैः ॥ सर्पिः सिद्धमथोर्ध्वजत्रुविकृतिघ्राणाक्षिशूलादिषु त्वग्दोषज्वरविद्रधिव्रणरुजा शुक्रेषु चैवेष्यते ॥ ५९ ॥

अडूसेका रस, कटुनिम्बकी छाल, पटोलपात, पित्तपापड़ा त्रिफला, बेलफल, नागरमोथा, दारुहलदी, वाला, कुटकी, कालावाला, धमासा, सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रायमाण, चन्दन, इनका काढ़ा और कल्क घृतमें सिद्ध करे सेवन करनेसे

ऊर्ध्व जत्रुकी पीड़ा नासारोग नेत्ररोग शूल कुष्ठ ज्वर वद व्रण नेत्रोंके फूले दूर होतेहैं ॥ ५९ ॥

रक्तपित्त फूला तिमिर ऊर्ध्वरोगपर ।

दार्वीपर्पटनिंबपर्पटकणादुस्पर्शयष्टी वृषा त्रायंती त्रिफला पटोलकटुका भूनिंबरक्तां बुदाः । एषां कल्ककषायसाधितमिदं सर्पिः प्रशस्तं नृणां पित्तासृक्प्रभवेषु शुक्रतिमिरेषूर्ध्वेषु च व्याधिषु ॥ ६० ॥

दारुहलदी, पित्तपापड़ा, कडुवे नीमकी छाल, पित्त पापड़ा, पीपली, धमासा, जेठीमधु, अडूसा, त्रायमाण, त्रिफला, पटोलपत्र, कुटकी, चिरायता, लालचंदन, नागरमोथा, इनका काढ़ा और कल्क सिद्धकर पिये तो रक्तपित्त फूला तिमिर और ऊर्ध्वरोगका नाश होताहै ॥ ६० ॥

शुक्लैरंडान्म्लमथोग्रा शतपुष्पा पुष्योद्धृतं यच्च बृहत्यास्तगरंच।तैलं सिद्धं तैः सपयस्कै-स्तिमिरघ्नं नस्ये श्रेष्ठं व्याधिचोर्ध्वेपरेषु॥६१॥

श्वेतएरण्डकी मूल, वच, तथा सौंफ, कटेरी ये औषधी पुष्यनक्षत्रमें उखाड़कर तेल और दूधमें डालकर पकावै जब तेलमात्र रहजाय तब इसकी नासदेनेसे तिमिर ऊर्ध्व रोग नाककानके रोग दूर होतेहैं ॥ ६१॥

क्वाथो मुष्ककभस्मनो नलशिखा दग्धं क्षिपेच्छंखकं, तं तेनैव पुनर्जलेन विपचेत्क्षारं सतैलं भिषक्। युंजीत व्रणतुष्टिषु व्रणरुजास्ववशात्सु नाडीषु च त्वग्दोषे च भगंदरे च विधिवत्कंठामये च स्थिरे ॥ ६२ ॥

मोरवा, नरसल, चीता, इनका काढ़ा कर इसमें मोरवेकी भस्म शंखकी भस्म डालकर तेलसे चतुर्थांश काढ़ा (जल) डाले इस क्षार और तेलको पृथक् पकावे तिलके तेलमें इस काढ़ेकी भस्म डाले और अग्निपर तेलको सिद्ध करे इसको व्रण तुष्टिपर व्रणदोष नाडीव्रण त्वग्दोष भगन्दर कंठरोग पर यह लगावे तो सब प्रकारके रोग दूरहो ॥६२॥

निशासयष्टीमधुपद्मकोत्पलैः प्रियंगुकाशावररोध्रचंदनैः। विपाच्यतैलं पयसा प्रयोजयेत् क्षतेषु संरोपणदाहनाशम् ॥ ६३ ॥

हलदी, जेठीमधु, पद्माख, कमल, प्रियंगु, लोध, काशतृण, लालचंदन, इनका काढ़ा और कल्क करके तिलोंके तेल और दूधमें पकावे जब तेलमात्रशेषरहजाय तब यह लगानेसे घाव भरजातेहैं तथा दाहनाश होताहै ॥ ६३ ॥

व्रणका उपचार।

जातीनिंबपटोलपत्रकटुकादार्वीनिशासा-

शिवामंजिष्ठाभयासिक्थतुत्थमधुकैर्नक्ताह्वबी-
जैः समैः । सर्पिः सिद्धमनेन सूक्ष्मवदना
मर्माश्रिताः स्राविणो गंभीराः सरुजो व्रणाः
सगतिकाः शुध्यंति रोहंति च ॥ ६४ ॥

जाई, कडुनीम, पटोलपत्र, कुटकी, दारुहलदी, सरवन, मजीठ, वाला, मोम, तूतिया, ज्येठीमधु, करंजके बीज यह सब समान ले घृतमें डालकर खरल करे तो मर्मस्थानमें उत्पन्नहुई सूक्ष्म फुन्सी तथा राध बहानेवाली बड़ी दुखदाई फोड़े शुद्धहो भरजाते हैं ॥ ६४ ॥

विषका उपचार ।

शिरीषपुष्पस्वरसेन भावितं सहस्रकृत्वा
मरिचं सिताह्वयम् । प्रयोजयेदंजनपान-
नावनैर्विमोहितानामपि सर्पदंतिना ॥ ६५ ॥

श्वेत मिरचोंको सिरसके फूलोंके रसमें सहस्र भावना दे इसके भक्षण अंजन और नास देनेसे सर्पका विष भी दूर होजाताहै ॥ ६५ ॥

बावले कुत्तेके काटेका उपचार ।

तैलं तिलानां पललं गुडं च क्षीरं तथाऽर्कस्य
समं हि पीतम् ॥ अलर्कमुग्रं विषमाशु हंति
सद्योद्भवं वायुरिवाभ्रवृन्दम् ॥ ६६ ॥

तिलोंका तेल, तिलचूर्ण, गुड़, आकका दूध यह समान भाग लेकर, पान करनेसे बावले कुत्तेका तीक्ष्णविष दूर होजाताहै जैसे वायुके वेगसे मेघ विलाजाते हैं ॥६६॥

मयूरपिच्छेन च तंडुलीयं काकांडयुक्तं प्रपिबेदनल्पम्। विषाणि च स्थावरजंगमानि सोपद्रवाण्यप्यचिरेण हंति ॥ ६७॥

मोरकी पंख, चौंलाईकी जड़ कागनका अंडा इनको बारबार पीनेसे उपद्रव सहित स्थावर जंगम विष शीघ्र दूर होते हैं ॥ ६७॥

आगारधूमो महिषाक्षयुक्तः सवाजिगंधानत तंडुलीयः। गोमूत्रपिष्टोप्यगदो निहंति विषाणि च स्थावरजंगमानि ॥ ६८॥

घरकाधुआं, गूगल, असगंध, तगर, चौंलाईकी जड़, गोमूत्रके साथ पीनेसे स्थावरजंगम विष दूर होताहै ॥ ६८ ॥

डाकिनी देवी पिशाच व डाकिनी बाधापर।

मांसीसेव्यालकांतीजलजलदशिखारोचना-पद्मकेशी स्पृक्का चन्द्रा हरिद्रा सितगद-पलिता स्नुगुता पद्मकेला। तुल्या गौराष्ट भागाश्चतुरिभकुसुमावर्तयः सर्वयोग्या कृत्या लक्ष्मी पिशाचा ज्वरविषमगरा घ्नंति चंद्रोदयाख्या ॥ ६९ ॥

जटामासी, आकाशजटामासी, रेणुकाबीज, वाला, नागरमोथा, मोरसिखा, गोरोचन, कमल, महाशतावरी, श्वेतलज्जालू, श्वेतकटेरी, हलदी, श्वेतइलायची, कूटेभूरिछरीला, केशर, मालकांगनी, पद्माख, बड़ी इलायची यह समान भाग ले श्वेतसरसों आठभाग नाग केशर, जाईके पत्ते चार चार भाग इनको बारीक पीस गोली बांध अंजनकरे तो कृत्या अलक्ष्मी पिशाच विषमज्वर और विषबाधा दूर होती हैं ॥

सबप्रकारके विषका उपचार ।

हरीतकी रोध्रमरिष्टपत्रहिंगुर्वचाशीतल
वारिपिष्टम् । एषोऽगदः सर्वविषाणि हंति
वज्रं यथा शक्रकराग्रमुक्तम् ॥ ७० ॥

हरड़, लोध, नीमके पत्ते हींग वच यह सब औषधी शीतलपानीके साथ पिये तो यह औषधी सब विषोंको दूर करतीहैं, जैसे इन्द्रके हाथसे छूटा वज्र शत्रुओंको नष्ट करताहै ॥ ७० ॥

सिद्धार्थत्रिफलाशिरीषकटुकीश्वेताकरंजा-
मर संजिष्ठा रजनीद्वयं त्रिकटुकं श्यामा-
वचाहिंगुभिः । शस्तं छागलमूत्रपिष्टमगदं
सर्वग्रहोच्चाटनं कृत्योन्मादविषज्वरप्रश-
मनं पानादिभिर्योजितम् ॥ ७१ ॥

सरसों, त्रिफला, सिरसके बीज, कुटकी, श्वेततुलसी करंजके बीज, दूर्वा, मजीठ, हलदी, दारुहलदी, सोंठ, मिर्च, पीपल, श्यामालता, वच, हींग, यह सब औषधी बकरेके मूत्रसे पीसकर गोली बांध अंजन करेतो सब प्रकारके ग्रहडाकिनी उन्मादरोग ज्वर विष मद्यकी मूर्छा दूर होती है ॥ ७१ ॥

कार्पासास्थिमयूरपिच्छवृहतीनिर्माल्यपिंडीतकत्वङ्मांसीवृषदंशविट्तुषवचाकेशाहिनिर्मोचनैः । नागेन्द्रद्विजशृंगहिंगुमरिचैस्तुल्यैस्तु धूपः कृतः स्कन्दोन्मादपिशाचराक्षससुरावेशज्वरघ्नं परम् ॥ ७२ ॥

कपासके विनोले,मोरपूछ, कटेरी,शिवनिर्माल्य, मैनफल दालचीनी, जटमांसी, बिलावकी विष्टा तुष (भूसी) वच केश सांपकी कैंचली हाथीकादांत, सवरकासींग,हींग, मिरच, इनकी तुल्य धूप देनेसे स्कन्द उन्माद अपस्मार पिशाच राक्षस सुरावेश ज्वर नाश होतेहैं ॥ ७२ ॥

त्रिकटुकदलकुंकुमग्रंथिकक्षारसिंहीनिशादारुसिद्धार्थयुग्मांवशक्रालणैः शितलशुनफलत्रयोशीरतिक्तावचातुत्थयष्टीवलालेहितैला-

शिलापद्मकैः ॥ दधितनरमधुकसार प्रियाह्वा निशाख्या विषाताक्ष्यशैलैः सच व्याभ्रकैः कल्कितैः घृतमभिनवमशेषमूत्रा शासिद्धं मतं भूतराह्वयं पानस्तद्ग्रहघ्नं परम् ॥ ७३ ॥

सोंठ, मिर्च, पीपल, तमालपत्र, केशर, पीपलामूल, जवाखार, दारुहलदी, बड़ीकटेरी सरसों दोनों वाला इन्द्रजव श्वेतलहसन, त्रिफला, काला वाला, कुटकी, वच तूतिया, जेठीमधु, खरैटी की जड़, मजीठ, रोहेड़ा, बड़ीइलायची, मनसिल, पद्माख, दही, तगर, महुएकासार मालकांगनी, हलदी, अतीस रसोत, चवक, यह औषधी समान भाग ले इनका कल्ककर गोमूत्र और नवीनघृतमें सिद्ध करे जब घृत मात्र रहजाय तब उतारले यह चाटनेसे सब प्रकारके ग्रह दूरहोते हैं इसका नाम भूतराव है ॥ ७३ ॥

नतं मधुकरं जलाक्षा पटोली समंगा वचा पाटली हिंगुसिद्धार्थसिंहीनिशायुग्लतारोहि-णीबदरकटुफलत्रिकाकांडदारुक्रमिघ्नाजगं-धामरांकोल्लकोशातकीशिग्रुनिंबाबुदेन्द्राह्व-यैः ॥ गदशुकतरुपुष्पबीजोग्रयष्टयाद्रि-कर्णीनिकुंभाग्निबिल्वैः समैः कल्कितैर्मूत्र

वर्गेण सिद्धं घृतं विधिविनिहितमाशु सर्वैः क्रमैर्योजितं हंति सर्वग्रहोन्मादकुष्ठज्वरां-स्तनमहाभूतरावं स्मृतम् ॥ ७४ ॥

तगर,महुएका गूदा,करंजकीछाल,लाख,पटोल, मँजीठ, वच, पाढलमूल, हींग, सरसों, कटेरी, हलदी, दारुहलदी, मालकांगनी, हरड़, बेर,कुटकी,त्रिफला, तेंदू और देवदारु, वांयविडंग, अजमोद, गिलोय अंकोल कटुतुरई सहँजने कीछाल,कटुनीमकीछाल, नागरमोथा,इन्द्रजव,कूट शिरस-के फूल और बीज वचनाग, ज्येठीमधु, गोकर्णी, दंतीमूल चीतावेल, यह समानभाग ले मूत्रवर्गसे घृतमें सिद्धकरे विधिपूर्वक इसको सेवन करनेसे सम्पूर्ण ग्रह उन्माद कुष्ठ दूर होतेहैं यह महाभूतरांव है ॥ ७४ ॥

दार्वी हरिद्रा कुटजस्य बीजं सिंही सयष्टी मधुकं च तुल्यम् ॥ क्राथः शिशोस्तन्यकृते तु दोषे सर्वातिसारेषु च सर्वदेष्टः ॥ ७५ ॥

दारुहलदी, इन्द्रजव, अडूसा, जेठीमधु, यह सब समान भागले काढ़ाकरै तो जिस बालकको दूध पीनेसे दोष हुआहो वो सब प्रकारके अतिसार दूर होते हैं ॥ ७५ ॥

बिल्वं च पुष्पाणि च धातकीनां जलं

सलोध्रं गजपिप्पली च ॥ क्काथावलेहौ मधुना विमिश्रौ बालेषु योज्यावतिसारितेषु ॥

बेलफल धायके फूल लोध गजपीपल,इनका काढा या अवलेह शहत डाल करदे तो बालकका अतीसार दूरहो॥

शृंगीं समुस्तातिविषां विचूर्ण्य लेहं विदध्यान्मधुना शिशूनाम् । कासज्वरच्छर्दिसमन्वितानां समाक्षिकं चातिविषासमेतम् ॥ ७७ ॥

काकडासींगी नागरमोथा इनका चूर्ण कर शहतमें इसको मिलाय बालकोंको चटावे अथवा अतीस और शहत चटावे तो बालककी खांसी ज्वर छवान्तका नाश होताहै ॥ ७७ ॥

ज्वर खांसी आदिका उपचार ।

धात्री चूर्णस्य कंसं स्वरसपरिगतं क्षौद्रसर्पिः समांशं कृष्णामानी सिताष्टप्रसृतिसमयुतं स्थापितं धान्यराशौ ॥ वर्षांते तत्समश्नाद्भवति विपलितो वर्णरूपप्रभावान्निर्व्याधिर्बुद्धिमेधास्मृतिवचनबलस्थैर्यसत्त्वैरुपेतः ॥ ७८ ॥

आमलेका चूर्ण २५६ तोले लेकर उसमें आमलेके

रसकीही भावना दे तदनन्तर घृत और शहत इसीके बराबर २५६ तोले ले पीपल ३२ तोले खरीमिश्री ६४ तोले इनको एकत्रकरके एकवर्षपर्यन्त धान्यराशिमें हांडीमें भर स्थापनकरे. एकवर्षके उपरान्त सेवन करनेसे केश काले होतेहैं, वर्णरूप प्रभाव बढताहै, मुखकांति होती है, सब रोग दूर होतेहैं बुद्धि धारणाशक्ति स्मृति वक्तृत्वशक्ति बल और स्थिरताकी प्राप्ति होतीहै ॥ ७८ ॥

मधुकं मधुना घृतेन च प्रलिहन्क्षीरमनुप्रयोजयेत्। लभते स च नात्मनः क्षयं प्रमदानां प्रियतां च गच्छति ॥ ७९ ॥

ज्येठीमधुका चूर्णकर शहतघृतके साथ खाकर पीछेसे मिश्री डाल दूध पिये तो शीघ्र स्खलित न होकर स्त्रियोंका प्यारा होताहै ॥ ७९ ॥

यष्टीतुगासैंधवपिप्पलीभिः सशर्कराभिः त्रिफलाप्रयुक्ता। आयुःप्रदा वृष्यतमाति मेध्या भवेज्जराव्याधिविनाशिनी च ॥ ८० ॥

मुलैठी, सैंधानोन, पीपल, त्रिफला, मिश्रीके साथ एकत्रकर सेवन करै तो आयु वीर्यकी वृद्धि बुद्धिकी प्राप्ति तथा जराव्याधि दूर होतीहै ॥ ८० ॥

चूर्णं श्वदंष्ट्रामलकामृतानां लिहन्ससर्पि

र्मधुना च युक्तम् । वृष्यः स्थिरः शांतविका-
रमुक्तः समाशतं जीवति कृष्णकेशः ॥ ८१ ॥

गोखरू, वा छोटागोखरू, आमले, गिलोय, इनका समान चूर्णकर घृत और मधुके साथ सेवन करै तौ वीर्यवृद्धि चित्तस्थिर व शान्त होकर व्याधि दूर होती और केश काले होतेहैं ॥ ८१ ॥

यष्टीकषायो लवणाग्रयुक्तः कलिंगकृष्णा-
फलकल्कमिश्रैः । सक्षौद्रमेतद्वमनं प्रशस्तं
कंठामयस्य श्रवणामयेषु ॥ ८२ ॥

ज्येठीमधुका काढ़ा करके सैंधा, इन्द्रजव, पीपल, त्रिफला इनका कल्ककर मधुके साथ सेवन करै तो वमन कंठरोग और कर्णरोग दूर होते हैं ॥ ८२ ॥

हरीतकीभिः क्वथितं सुवीरं दंत्यग्निकृष्णा-
विजचूर्णयुक्तः । विरेचनं सोरुवुतैलमेव निर-
त्ययं योज्यमथामयघ्नम् ॥ ८३ ॥

हरड़, वेर, दंतीमूल, चीता इनका काढ़ा पीपलके चूर्ण और एरण्डके तेल डाल पान करै तो रेचन होकर कोठा शुद्ध होताहै ॥ ८३ ॥

रास्ना दारुफलत्रयामृतलतायुक्पंच मूली

वलामांसीक्वाथकृतः सतैललवणः क्षौद्रः ससर्पिर्गुडः। पुष्पाह्वाघनबिल्वकुष्ठफलिनीकृष्णावचाकल्कितो बस्तिः कांजिकमूत्रदुग्धसहितो वातामयेभ्यो हितः॥ ८४ ॥

रास्ना, देवदारु, त्रिफला, गिलोय, दशमूल,(बेलसोना, पाढ़ा, कँभारी, पाढल, अरणी, सारिवन, पीठवन, छोटीबड़ी-कटेरी, गोखरू) वला, जटामांसी इनका काढ़ाकर तिलोंका तेल, सैंधालवण, शहत, घृत, गुड़, सौंफ, नागरमोथा, बेल, कूठ, त्रायमाण, पीपली, वच, इनका कल्ककरके इसकी वस्ती कांजी गोमूत्र दूधके सहित सम्पूर्ण वातरोगमें हित-कारी है ॥ ८४ ॥

वातरोगपर अनुवासन ..त।

तैलं वलाकथनकल्कसुगंधिगर्भिसिद्धं पयोदधितुषोदकमस्तुचुक्रैः। तद्वत्सहास्वरसरण्यमृतावरीभिः प्रत्येकपक्कमनुवाससमीरणघ्नम् ॥ ८५ ॥

खरैंटीका काढ़ा और कल्ककर सुवासित द्रव्योंसे सिद्धकर दूध दही कांजी तुषोदक मधूसूक्त (शहतके बर्तनमें डालकर तीनदिन धान्यराशिमें रखना) यह डालकर तेल सिद्ध करे इसीप्रकार छोटी कटेरीका स्वरस छोटी-

अरनी गिलोय शतावरीको तेलमें सिद्ध करे इन दोनों तेलोंकी अनुवासन वस्ती देनेसे सम्पूर्ण वातरोग दूर होतेहैं ॥ ८५ ॥

नासारोग मुखरोग मान हनु पीठ हाथ चरणसम्बन्धी रोग ।

नस्यं विदध्याद्गुडनागरं वा ससैंधवं मागधिकामथो वा । घ्राणास्यमन्याहनु बाहुपृष्ठशिरोक्षिकंठश्रवणामयेषु ॥ ८६ ॥

गुड़, अथवा सोंठ, अथवा सैंधा, और पीपल इनकी नस्य नासिकामें देनेसे नासारोग मुखरोग हाथ पैरके शिर नेत्र कंठ कर्णरोगका नाश होता है ॥ ८६ ॥

इत्येते विधिविहिताः प्रसिद्धयोगाः सिध्यर्थं विनिगदिता भिषग्वराणाम् । दृष्ट्वैतान्कथमपि चिकित्सिकोऽपि युज्यादित्यर्थं पुनरपि वक्ष्यतेऽत्र किंचित् ॥ ८७ ॥

इस प्रकारसे प्रत्येक रोगोंपर यह प्रसिद्ध योग्य वैद्य वरोंने कथन किये हैं इसमें वैद्यवरोंको सिद्धि होती है इनको देखकर वैद्यजनोंको चिकित्सा करनी चाहिये और अनुभवपूर्वक ध्यान करनेसे अभ्यास होजाताहै । अब कारण कहतेहैं ॥ ८७ ॥

वातप्रकोपका कारण।

संधारणाध्यशनजागरणोच्चभाषाव्यायाम-
यानकटुतिक्तकषायरूक्षैः ॥ चिंताव्यवाय
भयलंघनशीतशोकैर्वातप्रकोपमुपयाति घ-
नागमे च ॥ ८८ ॥

मलमूत्रादिके वेगका धारण करना, भोजनपर भोजन करना, ऊंचे स्वरसे बोलना, अधिक कसरत करना, पालकी आदिकी सवारी, खट्टा कडुवा कसेला सूखा रस भक्षणक-रना चिन्ता स्त्रीगमन भय लंघन शीत शोक तथा मेघाग-मनके समय वायुका कोप होता है ॥ ८८ ॥

पित्तके कोपका कारण।

कट्वम्लमद्यलवणोष्णविदाहितीक्ष्णक्रोधात-
पानलभयश्रमशुष्कशाकैः ॥ क्षाराद्यजीर्ण-
विषमाशनभोजनैश्च पित्तं प्रकोपमुपयाति
घनात्यये च ॥ ८९ ॥

कटु, अम्ल, मद्य, लवण, उष्ण, विदाही, तीक्ष्ण, क्रोध, सूर्यका ताप, अग्निसेक, भय, श्रम, सूखेपदार्थका भक्षण करना, क्षार आदिका सेवन, अजीर्ण, विषमभोजन, भूँखमें थोड़ाखाना, विना भूंखमें अधिक खाना, तथा मेघोंके न होनेमें पित्त कोपको प्राप्त होताहै ॥ ८९ ॥

कफकोपका कारण ।

स्वप्नाद्दिवामधुरशीतलमत्स्यमांसगुर्वम्ल-
पिच्छलतिलेक्षुपयोविकारैः॥स्निग्धातितृप्ति
लवणोदकपानभक्ष्यैःश्लेष्मा प्रकोपमुपयाति
तथा वसंते ॥ ९० ॥

दिनमें सोना मधुर शीतल पदार्थ मत्स्यमांसका भक्ष भारी अम्ल चिक्कण तिल गन्ना और दूधके पदार्थ स्निग्ध पदार्थ पेटसे अधिक खाना खारीपदार्थ और अधिक जल-पानसे तथा वसन्तऋतुमें कफ कोपको प्राप्त होता है ॥९०॥

तदेवमेते क्रमशो विशोध्या दोषाः प्रदुष्टा
युगपत्त्रयोऽपि ॥ कुर्वंति रोगान्विविधाञ्छ-
रीरे संस्थानसंज्ञाविगताननेकान् ॥ ९१ ॥

कुपितहुए वातादि दोषोंको क्रमसे शुद्ध करे अथवा एक साथही शुद्ध करे नहीं तो ये कोपको प्राप्त होकर शरी-रमें अनेकप्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं जिनका नाम और लक्षण नहीं है ॥ ९१ ॥

पारुष्यसंकोचनतोदशूलश्यामत्वसंगव्यथ-
चेष्टभंगान् ॥ सुप्तत्वशीतत्वखरत्वशोषाः
कर्माणि वायोः प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ ९२ ॥

वातादि दोषोंके कर्म ।

शरीरमें खुरखुरापन संकोच चवक शूल शरीरमें श्यामता अंगग्रह चेष्टानाश स्पर्शका अज्ञान शीता रूखापन शोष यह वायुके कर्म वैद्यक जाननेवालोंने कहे हैं ॥ ९२ ॥

परिश्रमस्वेदविदाहरागवैगंध्यसंक्लेदविपाककोष्ठाः । प्रलापमूर्च्छाभ्रमपीतभावान्पित्तस्य कर्माणि वदंति तज्ज्ञाः ॥ ९३ ॥

भ्रम पसीना दाह शरीरमें लाली दुर्गन्ध अंगमें आलस्य कोठेके विपाक होना, बहुत बोलना, मूर्छा भ्रांति पीतभाव यह पित्तके कर्म वैद्यजनोंने कहेहैं ॥ ९३ ॥

श्वेतत्वशीतत्वगुरुत्वकंडूस्नेहोपदेहस्तिमितत्वलेपाः ॥ उत्सेधसंक्रांतचिरक्रियाश्च कफस्य कर्माणि वदंति तज्ज्ञाः ॥ ९४ ॥

शरीरमें श्वेतपन सरदीका लगना शरीरमें भारीपन खुजली गीलापन चिक्कटता शरीर लिपासा रहना सूजन आलस्य ये कफके कर्म वैद्यजनोंने कहे हैं ॥ ९४ ॥

एतानि लिंगानि च तत्कृतानां सर्वामयानां च विभिन्ननाम्नाम् । कश्चिद्भवेत्प्राप्तिविशेष एव संज्ञांतरं येन तु संप्रयाति ॥ ९५ ॥

इन पूर्वोक्त कर्मोंसे वात पित्त कफके लक्षणोंको जाने यही अनेक नामके रोग उत्पन्न करते हैं किसीएककी प्राप्ति होनेसे विशेषतासे वही दूसरे नामान्तरको प्राप्त होताहै

आलस्यतंद्राहृदयाविशुद्धिर्दोषाप्रवृत्त्याकुलमूत्रभावैः । गुरूदरत्वारुचिसुप्ततासिरामान्वितं व्याधिमुदाहरंति ॥ ९६ ॥

आलस्य तंद्रा चित्तका सावधान न होना मलमूत्रका अवरोध जड़ता अरुचि शरीरका जकड़ना वधिरता यह लक्षण आमयुक्त व्याधिके जानना ॥ ९६ ॥

वातशमन ।

स्निग्धोष्णास्थिरवृष्यबल्यलवणस्वाद्धम्लतैलातपस्नानाभ्यंजनवस्तिमांसमदिरासंवाहनोद्वर्तनम् । स्नेहस्वेदनिरूहनस्य शयनस्थानोपनाहादिकं पानाहारविहारभेषजमिदं वातं प्रशांतिं नयेत् ॥ ९७ ॥

चिकने गरम जड़ वृष्य बलकारी लवण स्वादु अम्लपदार्थ तेल धूप स्नान तेलकी मालिश वस्ति मांस मद्य अंग दवाना वातहारक औषधी मलना, स्नेह, पसीना, निरूहवस्ति नस्य शयन उपनाह यह पान आहार विहारकी औषधि वातको शान्त करती है ॥ ९७ ॥

तिक्तस्वादुकषायशीतपवनच्छायानिशाजी-
वनं ज्योत्स्नाभूगृहवारियंत्रजलजस्त्रीगात्रसं-
स्पर्शनम्।सर्पिः क्षीरविरेकसेकरुधिरस्रावप्र-
लेपादिकं पानाहारविहारभेषजमिदं पित्तं
प्रशांतिं नयेत् ॥ ९८ ॥

पित्तशमन ।

तीखा स्वादु कसैलारस ठंढी पवन, छाया, रात्री, पानी, चांदनी, तहखाना, फुवारे, कमल, स्त्रीके शरीरका स्पर्श, घृत, दूध, रेचक, शरीरपर जल छिडकना रक्तमोचन, प्रलेप, ये औषधी पानआहार विहारमें पित्तकी शान्ति करती हैं ॥ ९८ ॥

रूक्षक्षारकषायतिक्तकटुकव्यायामनिष्ठीवनं
स्त्रीसेवाध्वनियुद्धजागरजलक्रीडापदाघातनं।
धूम्रस्तापशिरोविरेकवमनं स्वेदोपनाहादिकं
पानाहारविहारभेषजमिदं श्लेष्माणमुग्रं जयेत्

रूखी वस्तु, क्षार, कसैला, तीखा, कटु, व्यायाम, रालका निकलना, स्त्रीगमन, मार्गगमन, युद्ध, जागरण, जल-क्रीडा, पदाघात, धूमपान, ताप, मस्तकरेच, वांति, स्वेद, उपनाह, इत्यादि भोजन पान आहार विहारसे कफकी शान्ति होतीहै ॥ ९९ ॥

कफप्रकोपे वमनं सनस्यं विरेचनं पित्तभवे विकारे ॥ वाताधिके बस्तिविशोधनं च संसर्गजे च प्रविमिश्रमेतत् ॥ १०० ॥

कफके कोपमें नस्य, और वमन पित्तके विकारमें रेचक, वातके विकारमें रेचन, बस्ति दे. त्रिदोष व्याधिपर सब प्रकारके उपचार करना ॥ १०० ॥

ऋतुके अनुसार दोषोंकी उत्पत्ति ।

हेमंतवर्षाशिशिरेषु वायोः पित्तस्य तोयान्तनिदाघयोश्च ॥ कफस्य कोपः कुसुमागमे च कुर्वीत यद्यद्विहितं तथैषाम् ॥ १०१ ॥

हेमन्त वर्षा शिशिरऋतुमें वायुका कोप होताहै; शरद् ग्रीष्ममें पित्तका, वसन्तमें कफका, कोप होताहै. इनकी यथेच्छ विधानसे उपचार करे ॥ १०१ ॥

आमं जयेल्लंघनकोष्णपेयालघ्वन्नरूक्षोदनतिक्तयूपैः ॥ निरूहणैः स्वेदनपाचनैश्च संशोधनैरूर्ध्वमधस्तथाच ॥ १०२ ॥

लंघन, मंदगरम, जलपान, पेया, लघुअन्न, रूखाअन्न, कटु, मूंगरस, निरूहबस्ति, सेक, पाचन, रेचन इन प्रयोगोंसे आमव्याधिका नाश होताहै ॥ १०२ ॥

होमोपवासनियमाः प्रायश्चित्तं जपव्रतम्।
देवद्विजार्चनं मंत्रं बलिस्वस्त्ययनानि च॥

कर्मसे उत्पन्न हुई व्याधि होम उपवास नियम प्रायश्चित्त देवब्राह्मणोंकी पूजा मंत्रबलि स्वस्तिवाचनसे शांत होतीहै॥ १०३॥

बुध्वा तदन्यदपि तत्तदनुक्रमेण चेष्टां स्वयं समधिगम्य यथानुरूपम्॥रोगेषु भेषजमनल्पमतिर्विदध्याच्छास्त्रं हि किंचिदुपदेश बलं करोति॥ १०४॥

इसीप्रकार शास्त्रमें जो चिकित्सा नहीं की है बुद्धिमान् उन रोगोंमें चेष्टाको अपनी बुद्धिसे आनकर औषधी प्रयोग करे. कारण कि, शास्त्र बल करके दिग्दर्शन मात्र उपदेश करताहै॥ १०४॥

गुणाधिकं योगशतं निबध्य प्राप्तं मया पुण्यमनुत्तमं यत्॥ नानाप्रकारामयनिडभूतं कृत्स्नं जगत्तेन भवत्यरोगम्॥ १०५॥

अधिकतर गुणोंसे युक्त यह ग्रन्थ मेरा रचित श्रेयका सम्पादन करनेवाला है. इन मंगलकारी योगोंके सेवन

करनेसे यह सम्पूर्ण जगत् अनेक प्रकारके रोगोंका गृहरूप होनेपरभी रोगरहित होताहै ॥ १०६ ॥

इति श्रीवररुचिपंडितकृतयोगशतकं पंडितज्वालाप्रसाद-मिश्रकृतभाषाटीकासहितं सम्पूर्णम् ।

दोहा—उन्निससै चौंवन सुभग, सम्वत् कविकोवार ।
ज्येष्टकृष्णा तिथि चौथको, पूऱ्यो ग्रंथ विचार ॥ १ ॥
वसत रामगंगा निकट, नगर मुरादाबाद ।
तहाँ भजन हरिको करत, नित 'ज्वालाप्रसाद' ॥ २ ॥

❀ विक्रय्यपुस्तकें. ❀
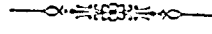
वैद्यकग्रंथाः ।

नाम.	की. रु. आ.
चरकसंहिता–भाषाटीका सहित	१०–०
हारीतसंहिता भाषाटीकासहित	३–०
अष्टांगहृदय (वाग्भट) भाषाटीका समेत	८–०
रसरत्नाकर भाषाटीकासमेत समस्त रसादि मारण शोधन आदि	५–०
बृहन्निघंटुरत्नाकर भाषाटीका प्रथमभाग	३–०
बृहन्निघंटुरत्नाकर भाषाटीका द्वितीयभाग	३–०
बृहन्निघंटुरत्नाकर भाषाटीका तृतीयभाग	३–८
बृहन्निघंटुरत्नाकर भाषाटीका चतुर्थभाग	२–८
बृहन्निघंटुरत्नाकर भाषाटीका पंचमभाग	५–८
बृहन्निघंटुरत्नाकर भाषाटीका छठवाँ भाग	४–८
बृहन्निघंटुरत्नाकर--सप्तम अष्टम भाग। अर्थात् "शालग्राम निघंटु-भूषण" (अनेक देशदेशांतरीय संस्कृत, हिन्दी, बंगला, महाराष्ट्री, गौर्जरी, द्राविड़ी तेलंगी, औत्कली, इंग्लिश, लैटिन्, फारसी अरबी भाषाओंमें सर्व औषधोंकेनाम और गुणोंका वर्णन औषधियोंके चित्रोंसमेत	८–०
बृहन्निघंटुरत्नाकर (संपूर्ण) देखने योग्य.आठोंभाग	३०–०
कामरत्न योगेश्वर नित्यनाथप्रणीत भाषाटीकासमेत... ...	१–१२
पथ्यापथ्यभाषाटीका	०–११
शार्ङ्गधर निदानसह भाषाटीका पं० दत्तराम चौबे मथुरानिवासीका बनाया	३–०
चिकित्साखण्ड भाषाटीका प्रथमभाग	४–०